कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



भारत से अनुबंधित श्रमिकों का जाना :-

- 19वीं सदी में भारत से अनुबंधित (गिरमिटिया) श्रमिकों को दूर-दूर के देशों में ले जाया जाता था।
- इस नई दुनिया में :-
  - एक तरफ आर्थिक वृद्धि थी, तो दूसरी तरफ जनता के कष्टों में वृद्धि
  - एक तरफ आय में वृद्धि, तो दूसरी तरफ गरीबी में वृद्धि
  - एक तरफ तकनीकी प्रगति, तो दूसरी तरफ उत्पीड़न था।
- 19वीं सदी में भारत व चीन के लाखों मजदूरों को बागानों, खदानों और सड़क व रेलवे निर्माण परियोजनाओं में काम करने के लिए दूर देशों में ले जाते थे।
- इन श्रमिकों के साथ अनुबंध या एग्रीमेंट किया जाता था।
- इन अनुबंधों में यह शर्त होती थी कि यदि मजदूर अपने मालिक के बागानों में 5 साल काम कर लेगा तो फिर वह स्वदेश लौट सकता है।
- भारत में ज्यादातर ये श्रमिक पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य भारत और तमिलनाडु के सूखे इलाके से जाते थे।
- 19वीं सदी के मध्य में इन इलाकों में भारी बदलाव आने लगे थे –
  (i) कुटीर उद्योग खत्म हो रहे थे।
  (ii) जमीनों का भाड़ा बढ़ा दिया गया था।
  (iii) खानों और बागानों के लिए जमीनों को साफ किया जा रहा था।
- वे बँटाई पर जमीन ले तो लेते थे लेकिन उसका भाड़ा नहीं चुका पाते थे।
- उन पर कर्जा चढ़ने लगा तो काम की तलाश में उन्हें अपने घर बार छोड़ने पड़े।
- भारतीय श्रमिकों को मुख्य रूप से कैरेबियन द्वीप समूह (त्रिनिदाद, गुयाना और सूरीनाम), मॉरीशस व फिजी ले जाया जाता था।
- तमिल आप्रवासी सीलोन और मलाया जाकर काम करते थे।
- बहुत सारे अनुबंधित श्रमिकों को असम के चाय बागानों में काम करवाने ले जाते थे।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



त्रिनिदाद के कोको बागान में काम करते भारतीय गिरमिटिया मजदूर, उन्नीसवीं सदी के प्रारंभ में

- मजदूरों की भर्ती का काम मालिकों के एजेंट किया करते थे। एजेंटों को कमीशन मिलता था।
- बहुत सारे श्रमिक अपने गांव में होने वाले उत्पीडन और गरीबी के कारण भी इन अनुबंधों को मान लेते थे।
- एजेंट भी इन श्रमिकों को झूठी जानकारी देते थे।
- कहां जाना है?
  यात्रा के साधन क्या होंगे?
  क्या काम करना होगा?
  तथा नई जगह पर काम व जीवन के हालात कैसे होंगे?
  इस बारे में उन्हें सही जानकारी नहीं दी जाती थी।
- बहुत सारे श्रमिकों को तो यह भी नहीं बताया जाता था कि उन्हें लंबी समुद्री यात्रा पर जाना है।
- अगर कोई मजदूर अनुबंध के लिए राजी नहीं होता था तो एजेंट उसका अपहरण तक कर लेते थे।
- 19वीं सदी की इस अनुबंध व्यवस्था को लोगों ने 'नई दास प्रथा' का भी नाम दिया है।
- बागानों में या कार्यस्थल पर पहुंचने के बाद मजदूरों को पता चलता था कि वे जैसी उम्मीद कर रहे थे, वहां वैसे हालात नहीं थे।
- नई जगह का जीवन एवं कार्यस्थितियां कठोर थीं और मजदूरों के पास कोई कानूनी अधिकार भी नहीं थे।
- इन सबके बावजूद मजदूरों ने जिंदगी बसर करने के अपने तरीके ढूंढ निकाले।
- बहुत सारे तो भाग कर जंगलों में चले गये। अगर ये मजदूर पकड़े जाते थे तो उन्हें भारी सजा दी जाती थी।
- बहुतों ने अपनी पुरानी और नई संस्कृतियों का समिश्रण करके आत्माभिव्यक्ति (मन के अनुभव व्यक्त करना) के नये तरीके खोज लिये थे।
- त्रिनिदाद में मुहर्रम के सालाना जुलूस को एक विशाल उत्सवी मेले के रूप में मनाया जाने लगा जिसका नाम 'होसे' (इमाम हुसैन के नाम पर) रख दिया गया। जिसमें सभी धर्मों के मजदूर हिस्सा लेते थे।
- इसी प्रकार रास्ताफरियानवाद नामक एक विद्रोही धर्म (जिसे जमैका के रैगे गायक बॉब मार्ले ने ख्याति के शिखर पर पहुंचा दिया था) में भारतीय श्रमिकों एवं कैरेबियन लोगों के बीच संबंधों की झलक देखी जा सकती थी।
- त्रिनिदाद और गुयाना में मशहूर 'चटनी म्यूजिक' भी भारतीय श्रमिकों की रचनात्मक अभिव्यक्ति का उदाहरण है।

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- इस सांस्कृतिक समागम में अलग-अलग स्थानों की चीजें आपस में घुल मिल जाती थी तथा उनकी मूल पहचान गुम हो जाती थी और नया रूप सामने आता था।
- ज्यादातर श्रमिक अनुबंध समाप्त हो जाने के बाद भी वापस नहीं लौटे। कुछ वापस लौटे भी तो कुछ समय बिताने के बाद अपने उन नये ठिकानों पर वापस चले गये।
- इसी कारण से इन देशों में भारतीय मूल के लोगों की संख्या बहुत ज्यादा पाई जाती है।
- नोबेल पुरस्कार विजेता साहित्यकार वी.एस. नायपॉल, वेस्टइंडीज के क्रिकेटर शिव नरैन चंद्रपॉल और रामनरेश सरवन भारत से गये अनुबंधित मजदूरों के वंशज थे।
- 20वीं सदी के शुरूआती सालों से ही हमारे देश के राष्ट्रवादी नेता इस प्रथा का विरोध करने लगे थे।
- उनके अनुसार यह बहुत अपमानजनक और क्रूर व्यवस्था थी।
- इसी दबाव से 1921 में इसे खत्म कर दिया गया।
- फिर भी कई दशकों तक भारतीय मजदूरों के वंशज कैरेबियन द्वीप समूह में अल्पसंख्यकों का बैचेन जीवन जीते रहे।
- वहां के लोग उन्हें 'कुली' मानते थे और उनके साथ कुलियों जैसा बर्ताव करते थे।

- नायपॉल के उपन्यासों में विछोह और परायेपन के अहसास को खूब देखा जा सकता है।

एक गिरमिटिया मजदूर की आपबीती

राम नारायण तिवारी भारत से गये एक गिरमिटिया मजदूर थें। जिन्होंने 20वीं सदी की शुरूआत में डेमेरारा में 10 साल काम किया था। उनके संस्मरण का एक अंश –

'तमाम कोशिशों के बावजूद मैं उन कामों को ठीक से नहीं कर पाया जो मुझे सौंपे गये थे..... कुछ ही दिनों के भीतर मेरे हाथ सब जगह से छिल गये थे और मैं हफ्ते भर तक काम पर नहीं जा पाया जिसके लिए मुझे सजा दी गई तथा 14 दिन जेल में काटने पड़े।

नये आप्रवासियों को काम बहुत भारी पड़ता था और वे दिन भर में अपना काम पूरा नहीं कर पाते थे।

अगर काम संतोषजनक ढंग से पूरा नहीं हुआ तो तनख्वाह भी काट ली जाती है। इसलिए बहुत सारे लोगों को उनका पूरा वेतन नहीं मिल पाता है और उन्हें तरह-तरह से सजा भी दी जाती है।

दरअसल मजदूरों को अपने अनुबंध की अवधि भारी मुश्किलों में बितानी पड़ती है।

विदेश में भारतीय उद्यमी

- विश्व बाजार के लिए खाद्य पदार्थ तथा फसलें उगाने के लिए पूंजी की आवश्यकता थी।
- बड़े बागानों के लिए तो बाजार व बैंकों से पैसा मिल जाता था।
- लेकिन छोटे किसानों के लिए तो साहूकार व महाजन ही थे।
- शिकारी पूरी श्रॉफ और नट्टूकोट्टई चेट्टियार ऐसे बैंकर तथा व्यापारी थे जो मध्य एवं दक्षिण पूर्वी ऐशिया में निर्यात की जाने वाली खेती के लिए कर्जे देते थे।
- इसके लिए या तो वे अपनी जेब से पैसा लगाते थे या यूरोपीय बैंकों से कर्जे लेते थे।
- उनके पास दूर-दूर तक पैसे पहुंचाने की एक व्यवस्थित पद्धति होती थी।

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- उन्होंने देशी-स्वरूप के व्यावसायिक संगठन विकसित कर लिये थे।
- अफ्रीका में यूरोपीय उपनिवेशकारों के पीछे पीछे भारतीय व्यापारी और महाजन भी जा पहुंचे।
- हैदराबादी सिंधी व्यापारी तो उनसे ही आगे जा निकले। उन्होंने 1860 के दशक में ही दुनिया भर के बंदरगाहों पर अपने बड़े-बड़े एम्पोरियम खोल लिये।
- इन दुकानों से सैलानियों को आकर्षक स्थानीय और विदेशी चीजें मिलती थी।
- यह एक फलता फूलता कारोबार था क्योंकि सुरक्षित और आरामदेह जलपोतों के आ जाने से सैलानियों की संख्या भी दिनों दिन बढ़ने लगी थी।

LET'S LEARN TOGETHER

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here